प्रदर्शनी में बिल्डिंग मांगकी सर्विस होती है। मनुष्यों को तो मेला देखने आना ही है। 7रोज का कोर्स तो फिर नहीं करते। कोई बिरले ही सेन्टर में जाते हैं। हर एक चित्र में लिख दो कि भगवानोवाच्य है कि इस समय के सब मनुष्य आसुरी सम्प्रदाय है। सतयुगमें है दैवी सम्प्रदाय। यह अक्षर है ही भगवान के। बिगड़ने की बात ही नहीं है। तुम हर एक समझाते हो कि बरोबर हम आसुरी सम्प्रदाय थे। सतयुग में थे दैवी सम्प्रदाय। उसको पावन दुनियाँ कहा जाता है। कलियुग को कहाजाता है पतित दुनियाँ। परन्तु अपने को कोई पतित समझते नहीं है। सन्यासी भल सन्यास करते है परन्तु जन्म तो विकार से लेते है नां। सन्यास भी है दो प्रकार का। एक हद का दूसरा बेहद का। वो हठ योगी निवृती मार्ग। यह है राजयोग पवित्र प्रवृती मार्ग। उन सन्यासियों को बोलो यह लक्ष्मी नारायण सर्वगुण सम्पन्न....थे। अब तुम ऐसे हो? तुम तो विकार से पैदा हुये हो। सतयुग में अगर विकार होता तो वाइसलेस क्यों, स्वर्ग क्यों कहते है। इसको नर्क पतित दुनियाँ क्यों कहते है। बुलाते है पावन बनाओ तो पावन दुनियाँ पहले यहां थी नां। साधु सन्त महात्मा सब इस समय पतित आसुरी सम्प्रदाय है। उनके चरण धोकर चर्णामृत लेते है। अब वो थोड़ेई अपने को पतित भ्रष्टाचारी समझते है। खुद कहते है हमको राम राज्य चाहिये। यह थोड़ेई समझते कि हम ही रावण सम्प्रदाय के है। इस समय है ही पतित दुनियाँ। यहां पावन कोई हो नहीं सकते। पावन दुनियाँ सतयुग को कहा जाता है। इस समय है ही पतित दुनियां। यहां पावन कोई हो नहीं सकते। पावन दुनियाँ सतयुग को कहा जाता है। यहाँ है पापआत्माओं का राज्य। तुम्हारे हर एक चित्र पर लगा हुआ हो गीता ज्ञान दाता शिव भगवानोवाच्य। बस फिर कोई कुछ कह नहीं सकेंगे। बाप कहते है मुझे डिफेम करते-2 भारतवासी कितने कंगाल बन गये है। इतने ढेर सन्यासी है गुरु बन बैठे है परन्तु है सब रावणसम्प्रदाय। शास्त्रों मे दन्त कथाये कितनी पढ़ी है। सन्यासी भी कोई समझते थोड़ेई है यह हो कैसे सकता है। जनावरों की पूजा जनावर करते है। ईश्वर क्या चीज है कोई भी नहीं जानते है। कोई भी नहीं जानते है। इसलिये ही आरफन्स है। सारी दुनियाँ का कोई धनी धोणी नहीं है। सब लड़ते ही रहते है। जहां भी जाओ गंद लगा हुआ है। लूटमार कितनी है। इसको कहा होजाता है कांटो का जंगल। शंकराचार्य की कितनी मान्यता है। परन्तु वो बड़े से बड़ा कांटा है। गाली देते है नां ईश्वर सर्वव्यापी है? हमारे बाप को क्या-2 गाली देते है। तरस भी हमको ही पड़ता है नां। हम मनुष्य से देवता बन रहे है तो वह समझ सकते है। दिखाया भी है कि बन्दरों के आगे रत्न रखो तो फेंक देंगे। तुम्हारी प्रदर्शनी में भी देख कर चले जाते है नां समझते कुछ भी नहीं है। कितना भी माथा मारो तो ज्ञान रत्न तो उनके लिये जैसे कि पत्थर है। परन्तु तुम जानते हो मनुष्य होकर बाप को नहीं जानते है तो कदर किसको है। यह लक्ष्मी नारायण भी कोई बाप को नहीं जानते है। वहां ऐसे भी नहीं कहेंगे सर्वव्यापी है। जो कलियुग की रस्म रिवाज है वो वहां सतयुग में हो नहीं सकती। माया भी कम नहीं है। माया ऐसे-2 कुकर्म करवाती है जो बात मत पूछो। गटर में गिरा देती है। इसलिये ही बहुत खबरदारी चाहिये। योग में होंगे तो कब भी कर्म इन्द्रियां दुःख नहीं देंगी। नहीं तो समझनाचाहिये हम पूरे योगी नहीं है। योगबल से ही कर्म इन्द्रियां बिल्कुल शीतल हो जाती है। परन्तु बहुत मुश्किल है। योग ही मुख्य का जादू है। नालेज तो बहुत सहज है। 7रोज में ही समझसकते है। योग में तो अच्छे-2 बच्चे फेल है। मेहनत ही योग में है। शरीर में होते हुये अपने को अशरीरी समझो क्यों कि वापस जाना है। बाप को यादकरो तो विकर्म विनाश होंगे। याद भूलने से ही माया का वार भी होता है। याद करते रहेंगे तो माया नहीं आवेगी। कर्मइन्द्रियोंको वश में करनाहै। याद में नहीं रहेंगे तो विकर्महोते रहेंगे। बाबा वातावरण से ही समझते है कि यह क्या याद करते होंगे। पढ़ाई में जो होशियार होते है वो घाटा नहीं पावेंगे। कोई बहुत हैं मास में लाख भी कमाते है। उन्नती होती जावेगी घाटा नहीं होगा। कई

है तो विचारा भी माना जाता है। तो यह भी पढ़ाई है जिससे तुम 21जन्म लिये देवता बनते हो। निश्चय है तो पढ़ाई पर कितना अटेन्शन देना चाहिये। विलायत में रहने वालों को भी यह ज्ञान धन मिलता रहेगा पूरलौकिक बाप भी अच्छे बच्चों को देख कर दिल खुश होती रहती है। बाकी पढ़ते रहते हैं। यहाँ तो अभी पढ़ते ही कितना हंगामा हो जाता है। बाप ने समझाया है मैं यह में कदर विघ्न डालते रहते हैं। अबला ऊपर अत्याचार तो कुछ नही। स्वर्ग में तो ऐसे कोई आये नही सकते। प्रश्न इतने पूछते हैं मत पूछो। एक देना चाहिये हमको फुरसत नही है। इतनी बुद्धि है नां। गालियाँ बको रहते हैं। शास्त्र-वाक्य एक किस्की दुनियाँ है। निरव पुआइजन कहा जाता है नां। जिस से आद मध्य अन्त दुःख दुःख पाते हैं। सब ऐसा दुःख देते हैं। यहा पीते हैं नां। बाप बच्चों से ही बात करते हैं। कदर बुद्धि को बिठाते नही है। बाबा ने कहा है बाहर वालों को पिलकुल मिलना ठ नही है। क्योंकि आजकल कुछ के मनुष्य बहुत बच्चे हैं। कोई भी समय पकड़ नहने देते नही करेंगे। बातें करने में मनुष्य होशियार होते हैं नां। सबको होशियार कहाँ बनाने में कौन है? ब्यासा। मनुष्य कहते हैं व्यास भगवानने बनाया है। लिखा है। बाप कहते हैं मैं तो कहा नही है कि मैं सर्वव्यापी हूँ। कितने दूरोशास्त्र बनाये हैं। बाप 100% कैसे से कितना समझाते बनाते हैं। कृष्ण को गाँव का छोरा और श्याम क्यों कहते हैं यह कोई समझते नही हैं। अब अभी तुम समझते हो। वो ही ऊँच से ऊँच थे फिर नीचे ते नीच बनते हैं। यह कौन गाँव का छोरा था। हफ्ते में 4आना कमाते थे तो बहुत खुश होते थे। वहाँ कोई खर्चा थोड़ेई लगता था। अब तुम बच्चे समझ गये हो तुम क्या से क्या बन गये हो। वैश नाट रे पनी से वेश पारूड बनते हो। मुझे ही सब कहते हैं हे पतित पावन हे लिबेटर। दुःख हर्ता सुख कर्ता। बाप आये हैं 21 जन्म लिये सुख देने लिये। यह तो है ही आसुरी दुनियाँ। तुम ईश्वरिय सम्प्रदाय हो। बाप को पहचानना बहुत मुश्किल है। पहचानें तो पक्का बच्चे बन ही बैठ जावे। परमात्मा की बहुत महिमा करते2 फिर तो एकदम ही निन्दा कर देते हैं। कदर सम्प्रदाय है नां। तुम भी अब समझते हो हम भी ऐसे ही थे। किसीकी तकदीर में नही हो तो बाप फिर क्या करे। श्रीमत पर नही चलेंगे तो कहेंगे ड्रामा। ओम शान्ती गुड् नाईट

20-5-67 :- रात्री क्लास:- मुरली जो मिस होती है वो यहाँ आकर सुननी चाहिये। बुद्धि में यह रहता है कि हमको भगवान पढ़ाते हैं। क्यों कि राजयोग है नां। ऐम आबजेक्ट है। भविष्य 21जन्म लिये राजाई मिलती है। तो कौन मूर्ख होगा जो 21जन्मों का वर्सा नही लेगा। बाप तो कहेंगे नां यह तो फूल है पढ़ते नही हैं। भगवान पढ़ाते हैं फिर भी जो नही पढ़ते हैं तो वो महान कमबख्त हुये नां। यह लक्ष्य सामने है नां। इनके आगे तो सब कंगाल हैं। तुम ब्राह्मण ही सबसे शाहुकार हो। फिर भी सुखधाम में जाते हो नां। भारतवासी कोई सब स्वर्गवासी नही बनते हैं। ऐसे बहुत होंगे जो स्वर्ग देखेंगे भी नही। इसलिये कितना पुरुषार्थ करना चाहिये। आगे जाने लिये। वहाँ कितना सुख है। अकाले मृत्यु नही होती। उनका भोजन आद कितना पवित्र होता है। जो अच्छी रीती पढ़ेंगे और दैवी गुण धारन करेंगे तो सतयुग में आवेंगे। आज कल जो भी मनुष्य मात्र है सब है कुसंगी। अब तुम बच्चों को संग मिला है बाप का। तुम ब्रह्मा मुख कुमारियाँ कहलाते हो तो भी पत्थर बुद्धि पूछते नही हैं कि तुम इतने ब्रह्मा कुमार कुमारियाँ हो तो जरूर प्रजापिता ब्रह्मा भी होगा। जरूर इनको बाप से वर्सा मिलता होगा। पूछना चाहिये नां ब्रह्मा बाबा की बायोग्राफी क्या है। लगा हुआ है ब्रह्मा कुमार कुमारियाँ तो पूछना चाहिये नां ब्रह्मा है कौन? अरे :-यह तो प्रजापिता ब्रह्मा है जिससे शिव बाबा आकर ब्राह्मण कुल रचते हैं। यह ब्राह्मण गाये हुये हैं। भक्ति मार्ग वाले ब्राह्मण भी गाते हैं ब्राह्मण देवी देवताय नमः ब्राह्मणी को भी तुम समझाये सकते हो। प्रजापिता ब्रह्मा तो है ही ग्रेट-2 ग्रैंड फादर। शिव को तो सिर्फ फादर कहेंगे। मनुष्यों को तो कुछ भी पता नहीं है। कहते जानते हैं वो बाप है टीचर है तो कितना अच्छा पढ़ना चाहिये। बाप सिर्फ कहते हैं

N.C. 20-2-67 Night

है मुझे याद करने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। तुम बच्चों की वुधी मे यह भी है कैसे हमने 84 जन्म लिये है। बीज को याद करने से सारा झाड़ याद आ जाता है। यह वरायटी धर्मों का झाड़ है। यह सिर्फ तुम्हारी वुधी मे ही है। यह भी तुम जानते हो वो है भक्ति मार्ग के सब शास्त्र उनसे दुर्गती ही होती है। उतरते आये है नां। भारत गोल्डन ऐज मे था अब आयरन ऐज मे है। यह अंग्रेजी अक्षर अच्छे है। इनका अर्थ अच्छा निकलता है। आत्मा सच्चा सोना होता है फिर उसमे खाद पड़ जाती है। अब बिलकुल झूठा हो गया है। इनको कहा ही जाता है आयरन ऐज्ड आत्मायें। सोना आयरन ऐज्ड होने से जेवर भी वैसा हो जाता है। अब बाप ने युक्ति बताई है मुझे याद करो। मै ही पतित पावन हूं। मामेकम याद करो। तुम्ही मुझको बुलाते हो हे पतित पावन आओ। मै कल्प-2 आकर तुमको यह युक्ति बताता हूं। मनमनाभव। मुझे याद करो। मदयाजीभव अर्थात स्वर्ग के मालि बनो। बाप कितनी युक्तियां बताते रहते है। कोई कहते है हमको योग मे बहुत मजा आता है। बस योग करके यह भागे। योगही अच्छा लगता है। कहते हमको तो शान्ती चाहिये। अच्छा तो बाप को तो कहीं भी बैठ कर याद करो। याद करते-2 तुम शान्ती धाम चले जावेंगे। इसमे योग सिखाने की बात ही नही है। बाप को याद करना है नां। ऐसे बहुत सैन्टर्स पर जाकर आधा पौना घण्टा बैठते है कि हमको नेष्टा कराओ। वो तो कहेंगे बाबा ने प्रोग्राम दिया है नेष्टा का। यहां बाबा कहते है चलते- फिरते याद करते रहो। नां से तो यह बैठना भी अच्छा है। बाबा मनाह नही करते है भले सारी रात बैठो। परन्तु ऐसे ह आदत नही डालनी है कि बस रात को ही याद करे। आदत यह डालनी है काम काज करते हुये याद करते रहना है। इसमे बड़ी मेहनत है। वुधी बार-2 और तरफ भाग जाती है। भक्ति मार्ग मे भी वुधी भाग जाती है। फिर अपने को चिऊंटी पहनते है। सच्चे भक्त जो होते है उनकी बात करते है। तो यहां भी अपने साथ ऐसी बात करनी चाहिये। बाबा को क्यूं नही याद किया? याद नही करेंगे तो विश्व के मालिक ही कैसे बनेंगे। यह जैसे कि अपने को सजा देनी होती है। वो आशिक माशूक तो नाम रूप मे फसे रहते है। यहां तो तुम अपने को आत्मा समझ कर बाप को याद करते हो। हम आत्मा इन शरीर से अलग है। शरीर मे आने से कर्म करना होता है। बहुत ऐसे है जो कहते है कि योग मे बिठाओ। हम दीदार करे। अब दीदार क्या करेंगे। वो तो बिन्दी है नां। अच्छा कोई कहते है कृष्ण का दीदार करे। कृष्ण की तो मूर्ती भी है नां। जो जड़ है सो फिर चैतन मे देखेंगे। इससे फायदा ही क्या होगा? सा० से फायदा क्या होगा? देखने से थोड़ेई फायदा होगा। तुम बाप को याद करो तो आत्मा पवित्र बने। नारायण का सा० होने से नारायण थोड़ेई बन जावेंगे। तुम जानते हो हमारी ऐम आब्जेक्ट ही है लक्ष्मी बनना। परन्तु पढ़ने बिना थोड़ेई बनेंगे। पढ़ कर शाहुकार बनो। प्रजा भी बनाओ तबही लक्ष्मी बनोगी। मेहनत है। पास विथ आनर होना चाहिये जो कि धर्मराज की सजा नां मिले। यह मुर्गी बच्चा भी साथ मे है। यह भी कहते है तुम तीखे जा सकते हो। बाबा के ऊपर तो कितना बोझ है। सारा दिन कितना खयालात करन पड़ती है। हम इतनी याद नही कर सकता हूं। भोजन पर थोड़ा याद रहती फिर भूलजाते है। खेल करता हूं तो समझता हूं कि बाबा और हम दोनो खेल करते है। बाबा को भूल जाता हूं=खेल करते-2 । त्रिकणी बस्तु है नां। बार-2 याद खिसक जाती है। इसमे बहुत मेहनत है। यादसे ही आत्मा प्योअर होनी है। बहुतों को पढ़ावेंगे तो ऊच पदपावेंगे। जो अच्छा समझते है वो अच्छा पद पाते है। प्रर्द शनी मे कितनी प्रजा बनती है। तुम एक-2 लाखों की सेवा करेंगे। और फिर अपनी भी अवस्था अच्छी चाहिये। कर्मातीत अवस्था हो जावेगी तो शरीर नही रहेगा। आगे चल तो समझेंगे अब लड़ाई जोर हो जावेगी। फिर बहुत सारे तुम्हारे पास आते रहेंगे। महिमा बढ़ती जावेगी। अन्त मे सन्यासी भी आवेंगे। बाप को याद करने लग पड़ेंगे। उनका पार्ट ही मुक्ति धाम मे जाने का है। नालेज तो लेंगे नही। अखबारों दवारा भी बहुत से= सुनेंगे। कितने गांवो है। सबको पैगाम देना है। ओम